विचार बिन्दु

बेहतर यही होगा कि आप कोशिश करें शायद इसमे आप नाकामयाब हो जाएं और उससे कुछ सीखें बजाये इसके कि आप कुछ करें ही नहीं।

–मार्क जकरबर्ग

डिजिटल प्रौद्योगिकी जीवन को सरल बनाते हुए बहुत कुछ छीनती भी है

तकनीकी प्रगति में कुछ भी सीधा-सरल नहीं होता। कोई भी नई प्रौद्योगिकी जो हमारे जीवन को आसान बनाने वाली चीज़ें लेकर आती हैं तो वह हम से बहुत सी चीजें छीन भी ले जाती है। यह इतना सहज से होता है कि हमें इसका तत्काल पता नहीं चल पाता। डिजिटल तथा अंतर्जाल (इंटरनेट) की प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को जितना आसान बना दिया है उसकी पहले कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। डिजिटल तकनीक और इंटरनेट ने हमारी पहुंच को अकल्पनीय हद तक बढ़ा दिया है; हमारे लिए लिए सूचना के द्वार और मनोरंजन के नये वितान खोल दिए हैं। नई प्रौद्योगिकी से बनी आभासी दुनिया हमें मौजूद समय में आपस में जोड़ भी रही है। हम नई-नई खोजों का आनंद ले रहे हैं। बहुत से लोगों के लिए यह नयी डिजिटल व्यवस्था धन कमाने का जरिया भी बनी है। इससे हमने बहुत कुछ पाया है, मगर इसने हमसे बहुत सी चीजें छीन भी ली है जिसके लिए उम्रदराज हो रही पीढ़ी अनेक बार नोस्टेल्जिक हो उठती है। जैसे, फोटो एलबम को ही लें जिनमें हम बड़े जतन से अपनी, अपने परिजनों व मित्रों की, पारिवारिक एवं अन्य समारोहों की श्वेत श्याम और फिर रंगीन फोटुएं चिपकाते थे। उन्हें एल्बम की शीट पर लगाने के लिए चिपकने वाले कोनों का उपयोग करते थे। अब उन एल्बमों की जरूरत नहीं रही। अब डिजिटल स्टोरेज ने उन्हें हम से छीन लिया। अब फोटो खींचने वाले घरेलू गैर पेशेवराना कैमरे भी नई डिजिटल तकनीक ने हम से छीन लिए हैं। अब कैमरे के अपरचर व टाइमर का हिसाब भी नहीं सीखना पड़ता और न यह पता करने के लिए कि फ़ोटो साफ आई है या नहीं फिल्म के धुल कर आने का इंतज़ार करना पड़ता है। नये डिजिटल कैमरे और स्मार्टफोन हमारे लिए सभी काम खुद ही कर लेते हैं। ली गई तस्वीरों को इंटरनेट पर उपलब्ध मुफ़्त सुविधाओं से उन्हें न केवल सुधार ही सकते हैं बल्कि परिचितों से तुरंत साझा भी कर सकते हैं। कैमरे के ऑटो क्लिक को सेल्फ़ी ने छीन लिया है। सर्च इंजिन 'गूगल' से पहले हम किसी किताब का पता करने तथा उसे खरीदने के लिए शहर की किताबों की दुकानों के चक्कर लगाते थे और दुकानदारों की मिन्नतें करते थे कि अमुक किताब वह हमारे लिए मंगवा दे। नेट ने यह काम उनसे छीन कर अमेज़न और प्रकाशकों की वेब साइटों को दे दिया है। किताबें ही क्यों अन्य सामान, यहां तक कि भोजन की थाली भी, ऑनलाइन ऑर्डर दे कर मंगा सकने के नये जमाने में पुरानी चीजों का खो जाना किसी को अखरता नहीं। अब हम शहर के बाज़ार की जगह अधिकतर इंस्टाग्राम पर मौजूद खिड़कियों में विंडो शॉपिंग करते हैं, जहां लक्षित विज्ञापन होते हैं और जिनके प्रायोजक जानते हैं कि हमारी रुचियां क्या हैं। नई तकनीक ने विंडो शॉपिंग के आश्चर्य और लालसा के भाव और दूकान के अंदर की मनोरम झलक पाने का आनंद छीन लिया है। जब हम स्कूल या कॉलेज में पढ़ते थे तब हमारे लिए जो सबसे महत्वपूर्ण चीज होती थी वह थी डिक्शनरी। पढाकुओं के पास अंग्रेजी से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिन्दी और हिन्दी से हिन्दी की तीन-तीन डिक्शनरियां होती थी। अंग्रेजी की कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड दोनों डिक्शनरियां घर में होनी लाज़मी थी। अंग्रेजी से हिन्दी के लिए फादर कामिल बुल्के और हिन्दी की भार्गव की डिक्शनरियों का अपना रुतबा हुआ करता था। इंटरनेट ने हमारे बचपन और किशोर वय की साथी रही उन डिक्शनरियों को हमसे छीन लिया। ऐसे ही 12 खंडों वाले एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में कुछ खोजने के लिए कॉलेज की लाइब्रेरी जाना होता था क्योंकि यह भारी भरकम कोश खरीदना हर एक के बूते की बात नहीं होती थी। थोड़े ऊंचे पढ़ाकू थैसारस रख कर गर्व अनुभव करते थे। अब उनके लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं होती, सभी इंटरनेट पर मौजूद है।

हमारे दैनिक अस्तित्व पर इंटरनेट ने कैसा प्रभाव डाला है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सुबह आंख खुलते ही सबसे पहला काम स्मार्टफोन की स्क्रीन पर टैप करना तो अब लोगों की आदत बन चला है। हम ऑनलाइन दुनिया में अधिक से अधिक समय बिताने लगे हैं। इंटरनेट से पहले का जीवन अब गुदगुदाती सुखद स्मृति बन कर रह गया है जिसे वापस नहीं पाया जा सकता।

डिजिटल क्रांति ने हमसे फुटकर नकदी भी छीन ली है। आज भारत के दूर-दराज के कोनों में रहने वाले लोग भी रोज़मर्रा का बहुत से सामान बिना नक़दी के ख़रीद रहे हैं। यहां तक कि एक पैकेट ब्रेड या बिस्किट ख़रीदने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करके दस-बीस रुपये जैसी मामूली रक़म का भी भुगतान ऑनलाइन ही किया जाता है। नकद पैसा जेब में रखने की जरूरत अब नहीं रही है। दुनिया के किसी कोने से पेन-फ्रेंड की डाक से चिट्ठी मिलना छिन गया है। डायल करने वाले फोन, सीडी और डीवीडी प्लेयर जैसे यंत्र अब यादों में सिमट गये हैं। कभी हम छत पर एरियल लगा कर रेडियो सेट पर बड़ी सावधानी से ट्यून करके शॉर्टवेव पर रेडियो सिलोन, बीबीसी या दूर दराज के दूसरे देशों के प्रसारण सुनते थे। इंटरनेट ने इन सब को छीनते हुए उनके विकल्प स्मार्टफोन में दे दिए हैं। रेडियो के समाचारों से घड़ियां मिलाना भी हमसे छिन गया है। कुछ भी हो जाए आकाशवाणी पर समाचार ठीक निर्धारित क्षण पर शुरू होते थे न एक सेकेंड आगे न एक सेकेंड पीछे। रेडियो से घड़ी मिलाने का आनंद हमसे छिन गया। अब तो इंटरनेट से जुड़े स्मार्टफोन अपनी घड़ी अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय समय के अनुसार अपने आप सेट कर लेते हैं। नेट पर ही अब सारे रेडियो तथा टीवी स्टेशन मौजूद हैं जिनका जीवंत प्रसारण इंटरनेट की बदौलत डिजिटल दुनिया में उपलब्ध है। गत्ते के कागज पर छपा रेल का छोटा सा टिकट यात्रा पूरी होने तक अब जेब में संभाल कर रखने का अनुभव हमसे छिन गया है। उसे खरीदने के लिए रेलवे स्टेशन जाकर लंबी लाइन में लगना अब पुरानी बात हो गई है। इंटरनेट पर ऑनलाइन खरीदा गया टिकट हमारे फोन में रहता है और उसे स्क्रीन पर ही टीटी को जरूरत पड़ने पर दिखाया जा सकता है। इंटरनेट निर्विवाद रूप से एक प्रकार का जादू है, मगर उसने हमारे जीवन के कुछ पुराने जादू पर पोंछा फेर दिया है। हमारे दैनिक अस्तित्व पर इंटरनेट ने कैसा प्रभाव डाला है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सुबह आंख खुलते ही सबसे पहला काम स्मार्टफोन की स्क्रीन पर टैप करना तो अब लोगों की आदत बन चला है। हम ऑनलाइन दुनिया में अधिक से अधिक समय बिताने लगे हैं। इंटरनेट से पहले का जीवन अब गुदगुदाती सुखद स्मृति बन कर रह गया है जिसे वापस नहीं पाया जा सकता।

अब हमें कहीं पहुँचने के लिए किसी से रास्ता पूछने की जरूरत नहीं रही। कभी वे ड्राइवर अधिक सफल होते थे जिन्हें शहर के रास्ते हाथ की हथेली की तरह मालूम होते थे। अब उनकी जरूरत नहीं रही है। अब हम गूगल मैप से अपने गंतव्य तक पहुंचते हैं। टैक्सी वाले, जो अब कैब वाले कहलाते हैं, भी आपसे पता पूछ कर इंटरनेट से जुड़े अपने स्मार्टफोन में फ़ीड करते हैं और गूगल के निर्देशों के अनुसार रास्ता चुनते हैं और गंतव्य तक पहुंचते हैं। टैक्सी बुलाने के लिए भी उसी फोन का इस्तेमाल होता है जो हमारे हाथ में होता है। वास्तव में वह हमारी हथेली में पूरा कंप्यूटर है। इस पर छोटे संदेश या बड़े आलेख लिख कर भेज सकते हैं। इससे भी आगे बढ़ कर दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से रीयल टाइम में संदेशों का आदान-प्रदान ही नहीं कर सकते हैं बल्कि वीडियो चैट भी जब चाहें कर सकते हैं। फोन तो हम पहले भी करते थे और उस पर लंबी-लंबी बातें भी होती थी। अपने बचपन को याद कीजिए जब यह उलाहना सुनते थे कि अरे वह तो एक घंटे से फोन पर ही चिपका या चिपकी हुई बैठी है। अब जब कोई फोन पर गेम खेलने में व्यस्त हो तब भी कोई ऐसी शिकायत नहीं करता। अब तो किसी को फोन करने से पहले भी संदेश भेज कर पूछा जाता है कि क्या मैं आपको कॉल कर सकता हूं? यह नये शिष्टाचार ने पुराने बेतकल्लुफ़ शिष्टाचार को छीन लिया है। अनौपचारिक रिश्ते हम से छिन गए हैं। इंटरनेट के इस युग में क्या हममें से किसी को सचमुच दूसरों के जन्मदिन याद रहते हैं? यदि नजदीकी रिश्तेदारों या प्रतिदिन ऑफिस में बगल में बैठने वालों के जन्मदिन कोई हम से पूछ ले तो हम बगलें झांकने लगते हैं। इन तारीखों तथा फोन नंबरों को सलीके से लिखी छोटी डायरियां हमसे छिन गई हैं। चिंता किस बात की; इंटरनेट मौजूद है ना। जन्मदिन की शुभकामनाएं देने के लिए इमोजी के साथ इंटरनेट पूरी तरह तैयार रहता है। मगर जो इंटरनेट पर नहीं हैं उनका क्या? इंटरनेट का एक विरोधाभास यह है कि जहां इसने जिस दुनिया को हमारे लिए खोल दिया है, वहीं इसने उस दुनिया को छोटा भी महसूस कराया है। हम नदी, पहाड़, बागानों तथा स्मारकों के शानदार दृश्य असल में नहीं डेस्कटॉप पृष्ठभूमि में देखते हैं। ऑनलाइन सर्फिंग में कुछ घंटे बिताने के बाद हमें दुनिया छोटी, दोहरावदार और सपाट दिखने लगती है। शायद हम अपना बोरडम मिटाने के लिए स्मार्टफोन पर उंगलियां फिराते है। पहले लोग जीवन के उबाऊ पलों को सहज स्वीकार करते थे। भाषा विज्ञानी बताते हैं कि 'बोरडम' शब्द आंशिक रूप से उन्नीसवीं सदी के मध्य तक सामने नहीं आया था। घर में मन नहीं लगा तो हम अवकाश में खाली फुटपाथों पर या आबादी से दूर लक्ष्यहीन सैर पर चले जाते थे। मोबाइल फोन और डिजिटल डाटा ने हमसे यह आनंद भी छीन लिया है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

मानपुरा का 60 साल का दिव्यांग सरकार की मदद से वंचित

बुजुर्ग दिव्यांग के चलने-फिरने के लिए बिना पैडल, हैंडल व ब्रेक वाली व्हील चेयर बनी सहारा

माण्डलगढ़, (निसं)। मांडलगढ़ के मानपुरा गांव में एक 60 साल के दिव्यांग बुजुर्ग की अनदेखी सरकारी सिस्टम के जिम्मेदारों पर कई सवाल खड़े कर रही है। सरकार ने भले की दिव्यांगजन के उत्थान के लिए कई योजनाएं शुरू कर रखी है, लेकिन जिम्मेदारों की नजरें इस दिव्यांग बुजुर्ग पर आज तक नहीं पड़ी है।

मांडलगढ़ उपखण्ड के मानपुरा गांव में रहने वाले सत्यनारायण पारीक का एक पैर एक दशक पहले किसी हादसे में कट गया था, जिससे वह दिव्यांग हो गया। घर की माली हालत बहुत दयनीय और शारीरिक कमजोरी के चलते कोई काम-धंधा भी नहीं कर सकता। इस बुजुर्ग दिव्यांग ने घर से बाहर घूमने-फिरने के लिए रोगी व्हील चेयर का जुगाड़ कर रखा है, लेकिन चिलचिलाती धूप में इस व्हील चेयर को सड़क पर चलाने में कड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं हादसा होने की आशंका बनी रहती है। व्हील चेयर में न पैडल है और न ही ब्रेक है।

मांडलगढ़ उपखण्ड के मानपुरा गांव का रहने वाला दिव्यांग सत्यनारायण पारीक।

दिव्यांग सत्यनारायण पारीक ने बताया कि घर मैं एक बेटा है जिसके पास भी काम-धंधा पर्याप्त नहीं है और पत्नी भी बुजुर्ग है। गांव के लोग ही सहायता करते आ रहे हैं, कई बार जिम्मेदार अधिकारियों और जन प्रतिनिधियों को सरकारी सहायता के लिए गुहार लगाई, लेकिन किसी ने अब तक सुध नहीं ली है।

- मानपुरा गांव के सत्यनारायण पारीक का एक पैर एक दशक पहले किसी हादसे में कट गया था
- बुजुर्ग दिव्यांग ने घर से बाहर घूमने-फिरने के लिए रोगी व्हील चेयर का जुगाड़ कर रखा है

आठ माह की बालिका की डाम लगाने से हालत बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती

भीलवाड़ा, (निसं)। अंधविश्वास के नाम पर मासूमी की जिंदगी से खिलवाड़ का खेल थमने का नाम नहीं ले रहा है। एक आठ माह की बालिका की डाम लगाने से हालत बिगड़ने के बाद परिजनों ने उसे एमजी अस्पताल के मातृ एवं शिशु चिकित्सालय में भर्ती करवाया है। एक और जहां परिजन डाम से इनकार कर रहे हैं, वहीं डॉक्टर्स इसे डाम लगाने से हालत बिगड़ने का मामला बता रहे हैं। फिल्हाल अस्पताल में बच्ची का उपचार किया जा रहा है।

एमजी चौकी पुलिस के अनुसार, चित्तौड़गढ़ जिले के गंगरार थाना इलाके की 8 माह की बच्ची रीना पिता हेमराज भील को मंगलवार सुबह यहां मातृ एवं शिशु चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया। डॉक्टर्स ने बच्ची का स्वास्थ्य परीक्षण किया तो उसके चेस्ट पर डाम लगा हुआ मिला। डॉक्टर्स ने अस्पताल चौकी पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने परिजनों से घटना की जानकारी चाही तो उन्होंने बताया कि उनकी बच्ची बीमार है, इसलिए उसे यहां भर्ती करवाया है। परिजनों ने बच्ची को डाम लगाने और लगवाने से इनकार किया है। स्थिति जांच के बाद ही साफ हो पायेगी। फिलहाल बच्ची का उपचार जारी है और उसकी हालत गम्भीर बनी हुई है।

बच्ची को उपचार के लिये भीलवाड़ा के एमजी अस्पताल के मातृ एवं शिशु चिकित्सालय में भर्ती करवाया है।

- परिजन डाम से इनकार कर रहे हैं, वहीं डॉक्टर्स इसे डाम लगाने से हालत बिगड़ने का मामला बता रहे है।

देवयानी तीर्थ स्थल पर बने सुलभ शौचालय की हो रही दुर्दशा

20 लाख रुपए की लागत से निर्मित सुलभ शौचालय करीब छह माह से सफाई को तरस रहा है

सांभरझील, (निसं)। देवयानी तीर्थ स्थल पर आने वाले सैंकड़ों श्रद्धालुओं की सुविधार्थ करीब 20 लाख रुपए की लागत से निर्मित अतिआधुनिक सुलभ शौचालय करीब छह माह से सफाई को तरस रहा है। नगर पालिका प्रशासन के माध्यम से बनवाए गए सुलभ शौचालय की नियमित साफ सफाई तो दूर यहां मिलने वाली सुविधाएं भी गायब है। छत पर रखी तीन पानी की टंकियां तीन रोज पहले आई आंधी के कारण उड़कर नीचे पड़ी है। टंकियों में पानी नहीं भरने के कारण सुलभ शौचालय अनुपयोगी साबित हो रहा है। वाशवेशन में सीमेंट के खाली प्लास्टिक के कट्टे भरे पड़े हैं। शौचालय सड़ांध मार रहे हैं। यहां आने वाली महिलाओं को टॉयलेट के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है। शौचालय की दीवार पर लगी टाइल्स कई जगहों से उखड़ कर गिर गई है।

यहां के पुजारियों ने बताया कि पालिका प्रशासन की ओर से टंकियों में पानी भरने के लिए करीब 10 हजार लीटर क्षमता का होद भी बनवाया हुआ है लेकिन आज तक उसे भरना तो दूर टंकियों में पानी चढ़ाने के लिए ना तो मोटर है और न हीं कोई कनेक्शन किया हुआ है। यह भी बताया जा रहा है कि यहां के शौचालय के लिए पानी के लिए तीन टैंकर स्वीकृत है लेकिन उनकी खानापूर्ति कागजों में की जाती है।

पर्यटन महोत्सव के दौरान इन टंकियों को टैंकर से पाइप जोड़कर भरा गया था, जबकि होद में पानी भरकर कनेक्शन जोड़कर इन टंकियों को भरने का काम कागजों में तो दिखा रखा है लेकिन धरातल पर सब कुछ उल्टा है। सुलभ शौचालय में कुल 12 संडास बने हुए हैं, सफाई नहीं होने के कारण भयंकर गंदगी जमा है और अब अंदर कोई जाने की स्थिति में नहीं है। पुरुष मूत्रालय में बेकार का सामान भरा पड़ा है जिसे हटाने के लिए स्थानीय प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ है। 23 मई को देवयानी तीर्थ स्थल पर वार्षिक मेले का आयोजन होगा। इस दौरान हजारों श्रद्धालु यहां तीर्थ स्थल पर आते हैं ऐसी स्थिति में समय रहते सुलभ शौचालय की सुध लिए जाने की दरकार है।

देवयानी तीर्थ स्थल पर सुलभ शौचालय की दुर्दशा हो रही है।

- 10 हजार लीटर क्षमता का पानी का होद आज तक रीता पड़ा है
- टंकियों में पानी चढ़ाने के लिए आज तक नहीं हुआ कनेक्शन
- देवयानी तीर्थ स्थल पर 23 मई को भरेगा वार्षिक मेला

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 15 मई, 2024

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, आश्लेषा नक्षत्र दिन 3:25 तक, वृद्धि योग प्रातः 7:41 तक, विष्टि करण सांय 5:21 तक, चन्द्रमा आज दिन 3:25 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मीन, बुध-मेष, गुरू-वृष, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा सांय 5:21 तक रहेगी। आज दुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी, देवी बगला मुखी जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:03 तक, शुभ 10:43 से 11:23 तक, चर 3:43 से 5:23 तक, लाभ 5:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:43, सूर्यास्त 7:03

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें अभी यथावत बनी रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मीन
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।